



राजभवन सूचना परिसर, उत्तराखण्ड

राजभवन नैनीताल/रामनगर 13 जून, 2024

राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने गुरुवार को वन विभाग द्वारा रामनगर में आयोजित "उत्तराखण्ड में संरक्षण और समुदाय: सद्भाव का एक प्रमाण" कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ करते हुए कहा कि वन एवं वन्य जीव से जुड़ी चुनौतियों के समाधान के लिए जन सहभागिता जरूरी है। राज्यपाल ने कहा कि उत्तराखण्ड की महिलाएं वनाग्नि से जुड़ी चुनौतियों के समाधान में अहम भूमिका निभा सकती हैं। चिपको आंदोलन का जिक्र करते हुए राज्यपाल ने कहा कि जिस प्रकार महिलाओं ने चिपको आंदोलन चलाकर पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इसी प्रकार वनाग्नि से जुड़ी चुनौतियों के समाधान हेतु वे क्रांति ला सकती हैं।

राज्यपाल ने बदलते सामाजिक परिपेक्ष्य में मानव वन्यजीव संघर्ष निवारण, वनाग्नि प्रबंधन एवं इको टूरिज्म से आजीविका संवर्धन जैसे मुद्दों से संबंधित विविध विषयों पर वक्तव्य देते हुए इन विषयों पर विभागीय प्रयासों को सराहा। राज्यपाल ने कहा कि उत्तराखण्ड में 70 प्रति शत से अधिक वन क्षेत्र है। हमारे पास वन एवं वन्य जीव संपदा का अमूल्य खजाना है, इसके संरक्षण के लिए जन भागीदारी जरूरी है। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा जन भागीदारी के माध्यम से मानव वन्य जीव संघर्ष, वनाग्नि से संबंधित चुनौतियों के समाधान के लिए जो प्रयास किए गए हैं वह सराहनीय हैं।

राज्यपाल ने कहा कि आज की चर्चा गंभीर संरक्षण चुनौतियों से निपटने में समुदायों और वन विभाग के बीच सहयोगात्मक प्रयासों के महत्व को रेखांकित करती हैं। निरंतर साझेदारी और नवाचार के साथ, उत्तराखण्ड के वनों और वन्य जीवों का भविष्य आशाजनक है। राज्यपाल ने वन विभाग द्वारा कराए जा रहे सार्वजनिक हित के कार्यों के व्यापक प्रचार-प्रसार किए जाने पर बल दिया।

डॉ० धनंजय मोहन, प्रमुख वन संरक्षक उत्तराखण्ड द्वारा जानकारी दी गई कि प्रदेश में सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से, बाघों की आबादी 178 से बढ़कर 560 हो गई है, और पक्षी विविधता 710 प्रजातियों के साथ विकसित हुई है। स्थानीय समुदाय, अपने वन संसाधनों से गहराई से जुड़े हुए हैं, वन्य जीवों के साथ पारस्परिक सह-अस्तित्व सुनिश्चित करते हुए 11,000 से अधिक वन पंचायतों का प्रबंधन करते हैं।

उनके द्वारा कॉन्फ्रेंस में बताया गया कि हालांकि चुनौतियां बनी हुई हैं, विशेषकर मानव वन्य जीव संघर्ष और वनों की आग, परन्तु "तेंदुओं के साथ रहना" जैसे नवोन्मेषी दृष्टिकोण समुदायों को संघर्षों को कम करने में मदद करते हैं, जबकि शीतलाखेत जैसी स्थानीय पहल प्रभावी अग्नि प्रबंधन और वन पुनर्जनन को प्रदर्शित करती हैं।

डॉ० समीर सिन्हा ने उत्तराखण्ड की समृद्ध वन्य जीव विविधता और संरक्षित क्षेत्र नेटवर्क के बारे में बात की। उन्होंने बाघ, आम तेंदुए जैसे बड़े मांसाहारी, हाथी जैसे शाकाहारी हिम तेंदुए की आबादी के अनुमान पर डेटा साझा किया। उन्होंने मानव मृत्यु और चोट की घटनाओं के

साथ-साथ वन्यजीवों की बढ़ती आबादी की चुनौतियों के बारे में भी बात की। उन्होंने बताया कि सर्प जनित मौतें एवं चोटें सबसे अधिक पिथौरागढ़ जिले में हैं।

श्री नरेश कुमार ने उत्तराखंड के विभिन्न हिस्सों जैसे धनोल्डी, देवलसारी, मुनस्यारी आदि में की गई पहल और अनुसंधान विंग द्वारा विकसित अन्य उद्यानों और पार्कों के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने पर्यावरण पर्यटन स्थलों में विभिन्न आवास सुविधाओं और वन्य जीवन के प्रति उत्साही लोगों को शामिल करने के लिए स्थानीय समुदायों, प्रकृति गाइडों, त्योहारों की क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण आवश्यकताओं में सुधार के लिए की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

डॉ० कोको रोसे तथा श्री० राजेश भट्ट, पर्यावरणविद् द्वारा मानव वन्यजीव संघर्ष प्रबंधन पर नवोन्मेषी कार्य और सामुदायिक सहभागिता पर प्रस्तुतिकरण कर टिहरी जनपद में तेंदुए के साथ रहने के कार्यक्रम के मामले के अध्ययन के परिणामों को साझा किया गया।

श्री महातिम यादव तथा श्री गजेन्द्र पाठक, फार्मासिस्ट अल्मोड़ा द्वारा वनाग्नि प्रबंधन पर नवोन्मेषी कार्य और सामुदायिक सहभागिता पर प्रस्तुतिकरण करते हुए अल्मोड़ा रेंज के शीतलाखेत मॉडल के परिचालन एवं परिणामों का विश्लेषण कर इसकी अन्य जनपदों में क्रियान्वयन किए जाने पर विचार रखे। उन्होंने प्रकाष्ठ की निर्भरता कम करने हेतु बीएल शाही हल वितरण के साथ औण दिवस आयोजित करने की पहल पर जानकारी साझा की।

श्री दिगांथ नायक द्वारा उत्तराखंड में इको टूरिज्म पर आधारित नवोन्मेषी कार्य के सम्बन्ध में सामुदायिक सहभागिता पर प्रस्तुतिकरण करते हुए छोटी हल्द्वानी में समुदाय आधारित इको टूरिज्म का केस अध्ययन और इसके परिणामों को साझा किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वन संरक्षक, गढ़वाल; श्री पी०के० पात्रो, मुख्य वन संरक्षक कुमाऊँ, डॉ० धीरज पाण्डेय, फील्ड डायरेक्टर, कॉर्बेट टाइगर रिजर्व, डॉ० विनय भार्गव, वन संरक्षक पश्चिमी वृत्त, डॉ० कोको रोसे, वन संरक्षक, उत्तरी कुमाऊँ वृत्त, श्री टी०आर० बीजू लाल, वन संरक्षक, दक्षिणी कुमाऊँ वृत्त, प्रभागीय वनाधिकारी अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, रामनगर, उप निदेशक राजाजी टाइगर रिजर्व एवं सहायक वन संरक्षक आदि मौजूद रहे।